

शिष्य धर्म

- ✦ जो व्यक्ति असली शिष्य बनना चाहता है उसको सेवा भाव से परिपूर्ण होना चाहिए।
- ✦ उसके मन में मानवीय मूल्य पूर्णरूप से विद्यमान हों, उसमें असीम धैर्य होना चाहिए ताकि वह गुरु द्वारा ली गई परीक्षाओं में खरा उतर सके।
- ✦ अगर शिष्य सेवा करता है और बहुत समय बीतने पर भी गुरु उससे एक भी शब्द न कहें और न ही उसे साधनाओं का ज्ञान प्रदान करें और फिर भी शिष्य अपनी सेवा या भावना में किसी प्रकार की न्यूनता न आने दे, तो समझना चाहिए वह शिष्य बनने के लायक है।
- ✦ अगर गुरु कोई ऐसा कार्य दें जो कि उसके बस की बात नहीं है, लेकिन फिर भी वह पूरे मन से उसमें जुट जाता है, तो समझना चाहिए उसमें गुरु के प्रति आस्था है।
- ✦ परिश्रम की भावना शिष्य का मूल गुण है। वह केवल प्रदर्शन न करे, अपितु सच्चे मन से कार्य सपन्न करे जो गुरु ने उसे सौंपा है।
- ✦ कई बार शिष्य गुरु के समक्ष कोई इच्छा प्रकट करे और वह फलीभूत न हो, या फलीभूत होने में अधिक समय लग रहा हो और फिर भी शिष्य के मन में कोई विपरीत विचार न आए तो समझें कि शिष्य पूर्णतः समर्पित है।
- ✦ शिष्य को आगे बढ़कर गुरु का कार्य संपन्न करना चाहिए और गुरु को विश्वास दिलाना चाहिए कि वह ही इस कार्य के लिए सर्वथा योग्य है।
- ✦ शिष्य के जीवन में धैर्य और विश्वास का सबसे अधिक महत्व है। समय उसके लिए कोई महत्वपूर्ण नहीं। उसे चाहिए कि वह आवश्यकता पड़े तो पूरा जीवन गुरु चरणों में समर्पित कर दे।
- ✦ गुरु के प्रति शिष्य की आस्था पूर्णतः बलवान हो। किसी भी स्थिति में, किसी भी समय उसकी आस्था में कमी न आने पाए।
- ✦ जीवन में एक बार ही गुरु का चयन होता है, जो शिष्य बार-बार गुरु बदलता है वह निकृष्ट है और उसे अयोग्य ही कहा जा सकता है।